Transcript of Zoom Meeting at 5.00 pm on Wed May 27 2026

This transcript is only partially corrected. It still has many machine-made errors. For example, the Hindi words लोकविद्या (lokavidya), बहुजन (Bahujan), स्वराज (Swaraj)... may be rendered variously! But much of it is understandable. Request all to go through their own parts and send me corrections. Initial chat is hidden in the pdf. The docx file is available in the shared Google Drive sub-folder **2026-05-27** in the shared folder Lokavidya Debates – Girish

Initial chat

Main Discussion

Girish Sahasrabudhe:

कुछ बातचीत शुरू करते हैं, क्योंकि कृष तो आज आ नहीं रहे हैं... गांधी शायद आ जाएं बाद में. तो दो चीजें हैं... एक तो पिछली बार से चल रहा है... कुछ दिन से... विषय विचार समिति और उसके राइट-अप... अभी और दो और आए हैं, पिछली मीटिंग के बाद में मतलब पिछले दो हफ्ते में. और वो आज ही आए मतलब... तो अभी लोगों को पढना है. उनके विषय में तो बहुत ज्यादा बात नहीं हो पाएगी आज. लेकिन कुछ अंदाजा शायद... नौ लेख हो गए हैं. और अविनाश अपना और एक जो है, वह पूरा कर लें तो हो जाते हैं.. Uh तो लगभग दस-ग्यारह कुछ लेख हो जाएंगे... यह अच्छा नंबर है। उसको लेकर के उसका एक इंट्रोडक्टरी लेख लिखना होगा. उसे लिखेंगे... और और कुछ आता है, तो और अच्छा है. तो मेरे ख्याल से उस दिशा में कुछ काम शुरू हो जाना चाहिए... वो कितने दिन लगेंगे इसको... क्योंकि मैं यहाँ पर अब बहुत ज्यादा दिन नहीं हूं... और कुछ दौड़ भाग भी रहेगी, तो उसे जाने से पहले जितना होता है... देखते हैं अगली मीटिंग तक. अगली मीटिंग आएगी... कुछ सात... आठ तारीख को... या दस को. दस तारीख को बुधवार होगा. तब तक कुछ बात इस पर क्लियर हो जाएगी कि यह कलेक्शन कैसा बना है. और उसका एक कवरिंग नोट भी हो जाएगा तब तक.

यह एक बात है, और फिर, उस दिन, हम लोग बाकी बात कर सकते हैं। इसके बारे में फाइनल एक बात जो तय हुई थी कि लोग मिलेंगे लोगों से जिनके नाम सुझाए गए हैं... जिन्होंने सुझाए हैं, वो उनसे बात करना शुरू कर सकते हैं. मैं यहां से चाहता था... हमारे साथ में एक यहां पर काम करते थे... उनसे भी बात नहीं हुई है... लेकिन कुछ बात हो जाएगी बीच में. एक दो बार अलग संदर्भ में बात हुई थी... विलास भोंगडे नाम है... तो उनसे भी कुछ बात करते हैं. वह शायद इसमें कुछ रुचि रखें और विचार समिति में आएंगे, तो कुछ अलग किस्म का इनपुट भी आएगा. उनका काम अलग किस्म का है, और वो ज्ञान आंदोलन के एंगल से काफी वाकिफ हैं. उनके साथ में काम हुआ ज्ञान पंचायत का भी काम हुआ है. और पिछली बार जब बातचीत हुई थी, तो कुछ पॉजिटिव था... इसके बारे में... जो हम लोग कहते हैं उस पूरी चीज के बारे में... तो शायद उनका नाम भी उनसे बात करेंगे. मतलब और नाम आ सकते हैं... लेकिन जो हैं उनसे बात करना खुद शुरू कर देना चाहिए... कुछ लोगों के साथ में जिनके आने की संभावना ज्यादा लगती है, उनसे तो बात करना शुरू कर देना चाहिए. और ये लेख सबको जाएंगे। नाम अलग अलग लोगों ने दिए हैं, किससे बात करना है, वह जानते हैं। मैं उनके साथ में एक बार बात कर लूंगा इसके बारे में सबके बारे में इंडिविजुअल कर लूं अलग से. सुरेश जी का लेख काफी लंबा है अभी पढ़ा नहीं गया है. लक्ष्मण का भी लेख नहीं पढा गया है. वो भी आप सब लोग देखें.

इनके ट्रांसलेशन की एक दूसरी बात थी वो भी कुछ हद तक कर लेना चाहिए इन पन्द्रह दिनों में. पिछली बार कुछ ऐसा... ऐसी बात हुई थी कि जिन्होंने लेख लिखे हैं, वो दूसरी जो भाषा जानते हैं... जो उनकी मातृभाषा होगी mostly तो उसमें ट्रांसलेशन... उसमें ट्रांसलेशन बनाने की. हिंदी दो-तीन लोग देख सकते हैं। तो... लेकिन जैसे अब कन्नड है, वह बेंगलुरु से देखा जाए। सुरेश और

jksuresh:

Yes, Yes

Girish Sahasrabudhe:

जीएसआरके देख सकते हैं कि नहीं मालूम, नहीं सुरेश, तो देख सकते हैं...

jksuresh:

Yeah, yeah

Girish Sahasrabudhe:

इसे किया जाए, और बाकी जो लेख हैं, उनके भी कन्नड़ ट्रांसलेशन अगर होते हैं तो... वह संभव कहां तक है आज क्लियर नहीं है मुझे... क्योंकि मुझे मालूम नहीं कि अंग्रेजी से कन्नड ट्रांसलेशन कितना अच्छा होता है. यह सुरेश बता सकेंगे। मराठी के ट्रांसलेशन ठीक-ठाक होते हैं... हिंदी के भी ठीक-ठाक होते हैं... लेकिन उनको देखना जरूरी होता है। बांगला के आप बता सकते हैं। अभिजीत. लेकिन अगर यह एक्सरसाइज कुछ गंभीरता से हम लोग करते हैं अबकी बार, तो मेरे ख्याल से नई भाषाओं में कुछ काम शुरू करने का... अलग अलग भाषाओं में शुरुआत हो सकती है इसके साथ में. क्योंकि बात यहाँ पे ये हो रही है कि विचार समिति में कौन लोग और आ सकते हैं तो यहां के लोग होंगे मराठी में... अगर इसको कुछ शुरू करना है, तो मराठी जानने वाले लोगों से बात करेंगे ही... तो उनके साथ में विचार समिति के संदर्भ में बात होगी... तो अन्य कामों के बारे में भी शायद बात बन सके. अगर इस समय हम दोनों चीजें साथ में कर लें तो शायद ज्यादा अच्छा हो... या ज्यादा आसान हो. मतलब ऐसा लगता है, कम से कम. होगा ही ऐसा कहने कोई कारण नहीं है... लेकिन... और हिंदी का काम तो आगे बढेगा ही. वो तो है ही अपनी जगह पर. और इसमें से... उसको विचार समिति... इसमें से... उसको आगे और किस तरीके से बहुजन आख्यान की दिशा में बढ सकता है... या बहुजन शोध कार्यक्रम की दिशा में बढ़ सकता है... इन दिशाओं में सोचना चाहिए इस विचार समिति के साथ में. तो ये चीजें हैं. इस पर और आप लोग बोलें कुछ... कि यह ठीक है क्या, इसमें और क्या करना चाहिए... और किस तरह के सुझाव इसमें हो सकते हैं. तो इसमें हम लोग एक पंद्रह बीस मिनट बात कर लें उसके बाद में दूसरे विषय पर आ सकते हैं. अभिजीत आप बोलें इस पर अभिजीत

Abhijit Mitra:

अभी इसमें हमारे यहां पर, हमने चित्रा जी का जो लेख है उसको बंगला में ट्रांसलेट करके हमने जीतेन को पढ़ने के लिए दिया अभी उसका कोई खास रिस्पांस नहीं आया है। दो चार सवाल पूछे हैं तो यहां पर वह जितेन यात्रा ऑर्गेनाइज करने में व्यस्त है तो, अभी देखो कुछ दिन में उससे बात हो पाएगी और इससे ज्यादा कुछ हमें कहना नहीं है। हमसे कुछ अभी लेकर निकल नहीं पाया है

Girish Sahasrabudhe:

ठीक है। वो तो, लेकिन मेरे ख्याल से सब चीजें... जितेन, तो आप के अच्छे परिचित हैं...

Abhijit Mitra:

अच्छे परिचित है

Girish Sahasrabudhe:

हाँ। सारे लेख एक साथ जाएं... जितेन से तो खैर बात हो ही सकती है... लेकिन सबके पास में सारे एक साथ जाएं. नहीं, मैं यह कह रहा था कि क्या बांगला में और भी चीजों का ट्रांसलेशन हो सकता है... सबका और इसका इसके लिए आप पहल ले सकते हैं, कुछ और लोगों को इसमें जोड सकते हैं। इस काम में भी और इस पर, आप...

Abhijit Mitra:

हाँ। दो, दो, एक और लोग हैं जो, जितेंन के हमारे यहां पर जो संपर्क, है संबंध, है वह जितेन के माताहत ही है और इन लोगों से बातचीत आगे बढ़ाने का कुछ और जो लेख है उसको भी बांगला में ट्रांसलेट करने का जिम्मा तो मैं ले सकता हूं लेकिन वही बात अपने अपने जिस तरह से वो चल रहा है। उसमें डेली मुलाकात का या जैसे होता है हर हफ्ते में एक दो बार बातचीत हो जाती है। ऐसी परिस्थिति नहीं बन पाई। नहीं बन पा रहा है। अभी जैसे कुछ एक मीटिंग थी तो, मीटिंग में हम जा नहीं पाए थे लेकिन वो मीटिंग उसके सिलसिले में था और कुछ कुछ मीटिंग वगैरह जो, होते हैं कुछ कोलकाता में प्रॉपर में नहीं है थोड़ा सा दूर हटके हैं तो वहां पर हम जा सकते थे, तो अच्छा होता, लेकिन कुछ और कारणों से हम जा नहीं पाए। अभी जितेंद्र से दोबारा बात होगी और जितेंद्र से ही बात हुई थी। दो तीन लोग और हैं। जिनसे हम जोड़ सकते हैं, बात थोड़ा, आगे बढ़ा सकते हैं बंगाल, में इलेक्शन के बाद और इतने सारी चीजों के बाद, जिसका माहौल है मतलब यह मौका अच्छा है। समय अच्छा है, जिसमें बात शुरू की जा सकती है, लेकिन वह हर एक के पास अलग अलग किस्म के चीज होते हैं अब यह जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में तो बात नहीं होगी डायरेक्टली लोगों से बात हुई दो चार लोगों से हमने, संपर्क किया है थोड़ी सी बात हुई है लेकिन। कोई बात आगे बढी है। ऐसी हम नहीं कह सकते।

Sunil Sahasrabudhey:

जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में बात क्यों नहीं हो सकती है

Abhijit Mitra:

जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में व्हाट्सएप ग्रुप में बात हो सकती, है हो सकती है, उसमें टिप्पणी। के रूप में हम करते रहे हैं लेकिन उससे ज्यादा बात आगे बढ़ी नहीं है। अभी तक

Sunil Sahasrabudhey:

नहीं बात बढने मतलब जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में कितने लोग

Abhijit Mitra:

व्हाट्सएप ग्रुप में काफी लोग हैं

Sunil Sahasrabudhey:

पच्चीस

Abhijit Mitra:

करीब, अ. पच्चीस से ज्यादा ही लोग हैं।

Sunil Sahasrabudhey:

हाँ। तो, सब, लोग

Abhijit Mitra:

सभी सक्रिय नहीं है, लेकिन कम से कम बीस पच्चीस लोग सक्रिय

Sunil Sahasrabudhey:

फिर क्या है

Abhijit Mitra:

और उसमें टिप्पणी टिप्पणी बीच बीच में हम करें हैं लेकिन कभी. उसमें कोई Uh मतलब अलग से उसका रिस्पांस कुछ मिला नहीं है इसलिए, मैं बताया कि वह बात आगे डायरेक्टली। किसी कुछ लोगों से बात करते, हैं, वह सुनते हैं। सुने हैं। मतलब जैसे समय समय पर

Sunil Sahasrabudhey:

नहीं नहीं, लेकिन जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में बात कहना जरूरी है अलग अलग बात करने का अपना महत्व है सिग्निफिकेंस उसका अपना है... लेकिन जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में जो आपका पॉइंट ऑफ यू है. अबाउट, थिंग्स एंड मेन जाते रहना चाहिए सो दैट वन, पोजीशन वॉटर

Abhijit Mitra:

हम्म, हम्म

Sunil Sahasrabudhey:

वह एक जनरल व्हाट्सएप ग्रुप में सबके सामने जाता रहता है कि. यह एक एंगल है चीजों को, देखने का पर्सनल कि एक ग्रुप देश में जगह जगह पर बिखरे हुए लोग हैं. उनके सोचने का एक है, जिसमें अभिजीत भी उस ग्रुप में है और यहां पर जो लिखते हैं. जनरल व्हाट्सएप में उन लोगों का जनरल स्पीकिंग खयाल होता है पॉलिटिकल है. इससे रिलेटेड है. करप्शन से रिलेटेड है. बहुत बातों से रिलेटेड हो सकते हैं. Whatever is

Abhijit Mitra:

मुझे समझ में आ रहे हैं... असल में इसके पहले के कुछ कुछ जगह पर हमने जब किया था तो उसका जो रिस्पांस ना मिलने से हम, थोड़ा सा हतोत्साहित हो गए थे शायद हमें जारी रखना चाहिए. और मैं करूंगा

Sunil Sahasrabudhey:

ऐसा है कि मैं भी सेम थिंग डिफरेंट कनेक्टेड विद अदर थिंग कुछ रिस्पांस मिले या ना मिले कोई बात नहीं रिस्पांस बाद में मिलेगा... नहीं मिलेगा

Abhijit Mitra:

यह बात यह समझ में आ रहा है.

Sunil Sahasrabudhey:

Point of view must go before the ग्रुप

Girish Sahasrabudhe:

सुरेश?

jksuresh:

तो हमें करना चाहिए ट्रांसलेशन From English to Kannada. I Can check it properly and, then send it off The other. One is from uh अगर हिंदी, टू, कनाडा And uh Another, from Yeah I think, you know, these two. I think From English, to Kannada and from Hindi, To Kannada I can write them out at I said, those translations I will use my own for the english And, possibly, anyone of the other Slightly, long to canada. And then send all of them after. My Uh What, Would you say My comments about how suitable they are That will be done yeah.

Girish Sahasrabudhe:

Yeah Yeah. I mean, it would be good to start this exercise...

jksuresh:

Yeah, yeah

Girish Sahasrabudhe:

It will pick up... I am sure about that because, once we find...

jksuresh:

You're right

Girish Sahasrabudhe:

... then I think naturally, many, more, people become approachable...

jksuresh:

Yes, Yes

Girish Sahasrabudhe:

That is, the

jksuresh:

Yeah. Yeah. Yeah. Absolutely थोड़ा. हुआ है unwillness बट. अभी Another few weeks, we can, even अंदाजा है So जब उनको देखने के लिए कुछ लोगों को बुलाएंगे, तब, इसके बारे में थोड़ा बात भी करेंगे जब तक वह पूरा संकलन तय, हो The whole anthology of the set of Article अब, तक, शायद लोगों के साथ बात भी हो सकता है. Was it. Switzerland लेकिन अब जो काम करना है, वो करके आप हम तो कम्युनिकेट...

Girish Sahasrabudhe:

Okay Avinash can we do this kind of thing...

Avinash Jha:

आप बीच में मेरा कनेक्शन लॉस्ट हो गया था अभी...

Girish Sahasrabudhe:

हाँ, हाँ नहीं, वही बात हो रही है लेखों की और ट्रांसलेशन उनका किया जा सकता है. तो...

Avinash Jha:

I'll भामो हिंदी वाला में देखूंगा एक. तो अपना जरूर देखूंगा और और भी कुछ देखना हो, तो देख सकते हैं. हिंदी वाला करेक्शन वगैरह के लिए और...

Girish Sahasrabudhe:

हिंदी में लिख रहे हैं, उसका

Avinash Jha:

बात करने के लिए Um. वो. तो फिर हिंदी में ही रहेगा उसका. अंग्रेजी करना पड़ेगा. और मैंने मेला भाटिया का नाम सजेस्ट किया था उनसे. मैं बात कर सकता हूं...

Girish Sahasrabudhe:

जी

Avinash Jha:

विचार समिति के लिए मैं वो सोच रहा था. अभी बात करें, या यह तैयार हो जाए. यह सब भी मटेरियल तब उनको एक बार वैसे ऐसे भी बात कर सकते हैं कि ऐसी ऐसी बात है. फिर जब यह तैयार होगा, तो उनको भेज देंगे, तब, देखेंगे उनका क्या

Girish Sahasrabudhe:

और एक और चीज थी. जिन लोगों के नाम सुझाए गए हैं, जिन्होंने सुझाए. वो चार लाइन उनके बारे में लिख कर के भेज दें अगर एक. तो सबके साथ हो जाए ...

Avinash Jha:

हाँ, हाँ

Girish Sahasrabudhe:

कि ये कौन लोग. हैं क्या करें बैकग्राउंड क्या है अपने लोगों का तो सबको मालूम है, लेकिन जो नए नाम है. उनके कुछ यहां पर बात हुई थी. उसमें से कुछ दो मीटिंग में तो बात हुई थी नए. नाम आए थे कि वह कौन लोग हैं. लेकिन सबके बारे में नहीं हुई है. तो मतलब, जिन्होंने भी नाम सुझाए हैं, वह हर एक के बारे में एक बैकग्राउंड छोटा सा जो सब देख सकते हैं, एक साथ अच्छा रहेगा. आगे के रेफरेंस के लिए भी और लोगों को क्योंकि सब तो जानते ही नहीं. है. सबको तो वो एक आप आपने भी बताया था. यह भाटिया जो हैं बेला भाटिया

Avinash Jha:

हाँ, हाँ

Girish Sahasrabudhe:

वह तो शायद उसमें से निकल आएगा ट्रांसक्रिप्ट पर से लेकिन आप लिख दे तो और भी अच्छा... मतलब क्या है बैकग्राउंड

Avinash Jha:

Oh

Abhijit Mitra:

बेला भाटिया तो, ड्रेज़ के साथ, जिसका काफी, कोलेबरेशन में काम है

Sunil Sahasrabudhey:

हाँ वही

Avinash Jha:

वो जहाँ वही है

s iPhone:

हस्बैंड, वाइफ

Avinash Jha:

वो हस्बैंड वाइफ थे अभी नहीं है लेकिन काम ज्यादा इंडिपेंडेंट ही है. उनका लेकिन अभी, भी

s iPhone:

अभी भी है वह छत्तीसगढ़ में झारखंड में कितना फर्क है.

Avinash Jha:

पता नहीं मुझे तो जानकारी है कि अब सेपरेटेड

s iPhone:

बेस्ट अब सेपरेट का कोई फॉर्मल

Avinash Jha:

अब वह सब नहीं पता

s iPhone:

क्योंकि अभी अभी कुछ दिन पहले

Avinash Jha:

इसमें वो लोग इसमें. Uh. We'll, Have

s iPhone:

Anyway इंडिपेंडें Individuals

Avinash Jha:

का काम ज्यादा अपना इंडिपेंडेंट लेकिन, क्योंकि If you sort, of come पता नहीं उतना. डिटेल

Girish Sahasrabudhe:

गांधी... गांधी?

Krishna Gandhi:

हेलो?

Girish Sahasrabudhe:

हाँ... नहीं, हम लोग यह बात कर रहे थे. आप कुछ इस दिशा में कुछ अभी कर सकते हैं. यह मलयालम ट्रांसलेशन आपके आर्टिकल्स का और कुछ और आर्टिकल्स का और

Krishna Gandhi:

हां मैं, जो है यही कोशिश करता हूं. के कम से कम दो तीन आर्टिकल्स मलयालम में हो जाएं...

Girish Sahasrabudhe:

हाँ, हाँ

Krishna Gandhi:

की कोशिश करता हूं तो उसमें कुछ ऐसे सोच रहे हैं. कुछ पहले एआई ट्रांसलेशन करें, फिर उसके बाद उसका करेक्शन करें.

Girish Sahasrabudhe:

हाँ. वही, वही, करना होगा

Krishna Gandhi:

ऐसा कुछ

Girish Sahasrabudhe:

एई... मतलब मैन्युअल करने जाएंगे तो, बहुत समय लगेगा... एआई वाला करके उसको ठीक कर दें तो... Also एक्सेप्टेबल ट्रांसलेशन होंगे मतलब अंडरस्टैंडेबल...

Krishna Gandhi:

थोड़ा अभी मैं करता हूँ. अभी एक हफ्ता तो कम से कम टाइम और लगेगा... So तो, दो तीन आर्टिकल्स, जो है करता

Girish Sahasrabudhe:

ये.... एक्चुअली वह वेबसाइट में काफी पेंडिंग पड़ा हुआ... था पिछले साल के जो राइटिंग गए नहीं थे... अब काफी कुछ आ गए हैं. और छब्बीस के अभी ऐड करने मुझे. छब्बीस में जो कुछ है हो जाएगा. पच्चीस के काफी कुछ बचे हुए थे. अब, इसके चलते चलते, अगर कुछ मल्टीलिंग्वल भी कंटेंट आ जाता, है उसमें तो अच्छा रहेगा. मतलब यह होगा, तो उसके साथ में वो भी कर देंगे, फिर धीरे धीरे. अगले दो तीन महीने में होगा...

Krishna Gandhi:

हम्म, हम्म

Girish Sahasrabudhe:

लेकिन जो पेंडिंग था, वह काफी आ गया है. काफी पूरा हो गया है. Uh और इसके जो शोध कार्यक्रम है, उससे रिलेटेड मटेरियल भी वह समय पर आ जाएगा. सारा विमर्श का, और जो कुछ बनारस से आता है. वो तो लगभग आ जाता है. कुछ दिन में बाकी चीजों में थोडा समय लगता है लेकिन अप हो जाएगा तो, यह सब जाएगा, उसके साथ में, वेबसाइट के जो लिंक वो भी सारे लिंक सब ठीक ठाक होंगे मतलब देखने. लायक. And look देख सकेंगे यह काम हो जाएगा ठीक है, इस पर और कुछ आपको चित्रा जी को उस पर

Chitra Sahasrabudhey:

बनारस के लोगों से बातचीत शुरू करेंगे. हम शनिवार की बैठकों में करने की कोशिश है. इस बात को अपने लोगों से तो हो जाएगी, लेकिन जैसे उनका फोन नंबर हमने प्राप्त किया है कला. उनसे वो आपको भी भेज देंगे, हम आप देख लें. उनका वो जो लिखते हैं बीच बीच में फेसबुक डालते हैं. और उनसे सीधे बातचीत भी हो सकती है. वो कैसे होगी. मतलब या तो ये सारे लेखों के मार्फत हो या, आप सीधे बात करें तो, भी हो जाएगी मेरे. ख्याल से क्योंकि विद्याश्रम की. जो वेबसाइट, है, वो भी वो काफी है. वो देख भी सकते हैं. इसके अलावा, जो नाम है उनसे अभी बातचीत शुरू नहीं की है, लेकिन हम लोग जल्दी शुरू करेंगे. बनारस हिंदी क्षेत्र से काफी लोगों के नाम आने चाहिए. कोशिश... इसका भोजपुरी में अनुवाद करने की कोशिश होगी, क्योंकि भोजपुरी साहित्य में के लोगों को काफी सक्रिय है लेखकों का, और मैं इस तो हम उनको भेजेंगे. और अनुवाद हो जाएगा. वहाँ पे. भोजपुरी केंद्र भी है. तो यह हो जाएगा मैं लोग भी कर लेंगे.

Girish Sahasrabudhe:

जी लक्ष्मण, आप, कुछ कहना चाहेंगे हो गया हो गया

Lakshman Prasad:

जी... ज्यादा कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं है लेकिन यह है जो कार्य आगे होंगे विचार समिति में सुझाए गए लोगों को जोड़ने वगैरह. का इसके लिए प्रयास मैं भी करूंगा. और अभी जो लेख भेजे गए हैं, कुछ उन्हें पढ़ने का प्रयास कर रहा हूं. तो अभी ज्यादा कुछ मुझे नहीं कहना है.

Girish Sahasrabudhe:

ठीक है, तो इसका यह अगले मीटिंग में इसको इसका एक कुछ फाइनल शेप जो कुछ हो जाएगा, तब, तक उस पर कुछ बातचीत हो, जाएगी, कुछ फाइनल बात हो सकेगी. शायद अगली मीटिंग में कि कैसे आगे बढना है, उसमें Uh तो, अब, इसमें दूसरा एक विषय था... इससे संबंधित था कि AI के कारण यह ज्ञान की दुनिया में जो कुछ हो रहा है अभी, और ज्ञान के बारे में, जो नए विचार आ रहे हैं इसके साथ में, एआई के साथ में कि ज्ञान कैसे जमा किया जाता है, कैसे वेरिफाई होता है, वगैरह वगैरह. तमाम चीजें हो रही है... तो इसके बारे में कुछ. यहां पर हम लोग बातचीत शुरू करें, जो आगे भी चलेगी इस विचार

से यह दूसरा विषय रखा था. कल कुछ सुनील जी से बात हुई थी इसके बारे में तो और यह जो डीकेएस जर्नल है... जो जनरल निकाला जा रहा है बेंगलुरु से... उसमें इस बार एक लेख है, जिस पर कमेंट किया है सुनील जी ने. सुरेश का भी कमेंट आया है और भी कुछ एक कमेंट हैं. कृष्ण गांधी जी का लेख है उसमें स्वराज पर. उसपर हम लोग पहले बात कर चुके हैं यहां. पर उस पर भी आगे बात हो सकेगी कभी. लेकिन आज हम लोग इस पर कुछ शुरू करते हैं, बातचीत जो आगे भी चलेगी. सुनील जी इसको कुछ इनिशिएट करें आज...

Sunil Sahasrabudhey:

यह विषय जो है वो विशेष तौर पर खुला है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल होना शुरू हो जाने के बाद ऐसा. हमें ऐसे ऐसी हमारी जानकारी के हिसाब से देखिए. एक पहली बात यह साफ कर दें. की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संबंधित जितनी बातें हैं, उसका जो साइंस से संबंध है, जो मैथमेटिक्स से संबंध है. जो और चीजों के साथ शासन के साथ में मार्केट के साथ में जो संबंध है यह बहुत बड़ा विषय और इसके बारे. में हमें कोई बहुत ज्यादा जानकारी ऐसा नहीं है. यहां उपस्थित लोगों में और लोग हैं, जिनको थोड़ी ज्यादा जानकारी जरूर होगी... है, ऐसा दिखता है... इसलिए, हम पूरा विषय ना लेकर के हम केवल एक चीज लेना चाहते हैं जिससे, यह बात शुरू की जा सकती है जिससे हम लोगों ने शुरू करने की कुछ समय पहले कोशिश की थी. एक कंसेप्ट है इंटरैक्टिव प्रूफ का... इंटरैक्टिव प्रूफ के नाम से जब आप गूगल पे या और जो जगह होती है, चैट वगैरह में जीपीटी. वगैरह में कहीं देखेंगे तो काफी कुछ मिल जाएगा, क्योंकि इसका इस्तेमाल हुआ है. इस शब्दावली का इस पूरी बहस में, जैसा कि इस पेपर में भी, जो यह मुरली... मीनाक्षी मुरली का पेपर है... छपा है... यह बहुत सफाई से फर्क नहीं किया जाता है कि जो नेचुरल साइंस की, यानी फिजिक्स वगैरह की, जो डिस्कवरी, जिनको वह डिस्कवरी कहते हैं... डिस्कवरी कहने का मतलब है कि रियल पॉइंट ऑफ यू होता है... यानी जो सामने नहीं था, उसको सामने ले आना या उसकी एक समझ बना देना, जो वास्तव में डिस्कवरी शब्द इस अर्थ में इस्तेमाल किया जाता है, जो छिपा हुआ है या सामने नहीं है... और साइंस वालों ने लगातार अपने कामों के लिए डिस्कवरी शब्द का इस्तेमाल किया है. अपने लॉस के लिए अपने और थ्योरिटिकल कंस्ट्रक्ट के लिए डिस्कवरी शब्द का इस्तेमाल किया है... यह रियलिस्ट पॉइंट ऑफ व्ह्यू से होता है. और पॉइंट्स ऑफ व्ह्यू है साइंस के... जैसे इंस्ट्रूमेंटलिस्ट हो सकता है.... वह डिस्कवरी ना मानते हो वह कुछ और कहते हो उसे लेकिन ज्यादातर लोग रियलिस्ट इस मामले में वर्किंग, वर्किंग साइंटिस्ट भी रियलिस्ट है जैसे कि वह वास्तव में दुनिया वो जो अपने काम है और उसके बारे में जो कहा जा रहा, है, उन्हीं के द्वारा, औरों के द्वारा उसको एक नैरेटिव के रूप में नहीं देखते हैं. उसको ट्रूथ के रूप में देखते हैं कि वह उन्होंने दुनिया के बारे में पता लगाया कि दुनिया ऐसी है यह उसकी समझ इसके पीछे एक महत्वपूर्ण अंतर रहा है. मैथमेटिकल, जिन्हें डेमोस्ट कहते हैं, एक समय की भाषा है या जिसके प्रूफ हुआ करते हैं और दूसरे, यह यह दुनिया के बारे में नेचर के बारे में जो है जिनको डिस्कवर करते हैं. इस तरह की भाषा का इस्तेमाल करते हैं, एक जगह प्रूफ का इस्तेमाल होता, है, दूसरी जगह डिस्कवरी का इस्तेमाल होता है. इस नई बहस में मुझे ऐसा प्रतीत हुआ... हो सकता है यह एकदम सही ना हो और लोग बता सकते हैं, सुरेश बता सकते हैं अविनाश, जिन्होंने... लोगों ने पढ़ा है ज्यादा... हमें ऐसा महसूस हुआ इस बहस में थोड़ा सा डिस्कवरी में और प्रूफ में यानी मैथमेटिकल ट्रूथ में और फिजिकल लॉज में बहुत सफाई से अंतर करके बात नहीं की गई. वो बात करते वक्त पर इस पर फोकस नहीं करते हैं कि यह दो अलग अलग चीजें हैं... और वेस्टर्न फिलॉसफी कुछ नहीं तो पिछले दो सौ साल से ज्यादा दो सौ ढाई सौ साल से दो सौ साल से कुछ ज्यादा सवा दो सौ साल से... बहुत सफाई से यह फर्क कर रही है, और बार बार यह फर्क कर रही है कि यह मैथमेटिकल ट्रूथ क्या है, और डिस्कवर्ड ट्रूथ अबाउट नेचर क्या है... इसमें साफ अंतर करते हैं. एक अबाउट द वर्ल्ड है, और दूसरा एक लैंग्वेज के अंत के टाइप की बात और यह अंतर महत्वपूर्ण हो जाता है. जब आप जब आप वह इंटरैक्टिव प्रूफ की बात करते हैं... हम बहुत फोकस्ड़ बात नहीं कर रहे हैं क्योंकि, इसके बारे में उतनी सफाई हमारे पास खुद नहीं है... लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आ जाने के बाद से हम लोगों ने लोकविद्या के लिए... लोकविद्या की बात करने के लिए बड़ी जगह मिली है इंटरनेट आने से ही कहना शुरू कर दिया था... हमारा प्राइमरी थीसिस है, 2004 या उसके आसपास, या उसके पहले का, या बाद का आज से करीब बीस पच्चीस साल पहले से हम, यह बात कह रहे हैं कि इंटर मेजर पेपर हम लोगों के कि किस तरह से वर्ल्ड वाइड वेब के आ जाने से... और फिर यह भी है उसमें ट्रेडिशनल नॉलेज

और इंडीजीनस नॉलेज... सबका बहुत बड़े बड़े खाते खुल गए उसके ऊपर. आप खोजेंगे, तो बहुत कुछ मिलेगा. एक तर्क यह था उसमें... क्योंकि, सॉफ्टवेयर की जो दुनिया है वह फॉर्मल लैंग्वेज से रिलेटेड दुनिया किस तरह से चलती है. इससे रिलेटेड नहीं है... दुनिया के बारे में बात करने का जो तरीका है उससे रिलेटेड और दुनिया किस तरह से चलती है, इससे भी रिलेटेड है, लेकिन उस तरह से रिलेटेड नहीं है, जिस तरह से केमिस्ट्री, फिजिक्स, बायोलॉजी के जो है, वह जिस तरह से दुनिया से रिलेटेड है, उस तरह से रिलेटेड... कहीं तो भी बीच में एक लैंग्वेज की बड़ी भूमिका आ जाती है फॉर्मल लैंग्वेज की मेनली और कुछ हद तक नेचुरल लैंग्वेज की भी अच्छा नया सिस्टम देखने का लैंग्वेज को थोड़ा अलग है अभी का, लेकिन जो हम लोग के समय का जो प्रभावी डोमिनेंट रहा है वह चोम्स्की के डीप स्ट्रक्चर, और जनरेटिव ग्रामर से रिलेटेड सिंटैक्स का और Deep structure, logic कहीं तो भी इस तरह का कंसेप्ट भी आता है. उसमें कि मनुष्य जब पैदा होता है तो, वह एक लैंग्वेज के साथ तो नहीं पैदा होता है लेकिन, एक, आइडिया ऑफ लैंग्वेज. के साथ पैदा होता थोड़ी सी दिक्कतदार. बातें हैं यह. एकदम सफाई हो इसमें या यह इस बात को फाइनल कर दिया जाए ऐसी स्थिति नहीं होती है. ना, है आइडिया ऑफ लैंग्वेज के साथ पैदा होता है यानी. डीप, स्ट्रक्चर, को इन्हेरिट करता और जनरेटिव ग्रामर्स ट्रांसफॉर्मेटिव ग्रामर्स जो कुछ, भी लिखते हैं अलग अलग भाषाओं के उनके मार्फत एक्चुअल लैंग्वेज लर्निंग जब होती है. तो ग्रामर्स, को सीखता है भाषाओं में अपनी बात कहना सीखता है.

निश्चित भाषाओं में इस तरह की बात थी. लेकिन अपरेंटली जहां तक हमारे समझ में आया है कि यह जो स्टेटिस्टिकल इंटरप्रिटेशन, स्टेटिस्टिकल मेथड ऑफ इंफरेंस जो है, प्रॉबेबिलिस्टिक इंफरेंस की जो बातें बड़े पैमाने पर आ गई है एआई के साथ में खास करके इसके... इससे कि वह इंटरनेट के ऊपर अवेलेबल जितनी जानकारी होती है उस, सब जानकारी को तुरंत देख करके और फिर एक जवाब बनाता है, जो जवाब वह बनाता है. वह बेसिकली सीनियोटिक के हिसाब से यानी किस शब्द के बाद कौन सा शब्द बहुत ज्यादा आता है. इसकी बड़ी भूमिका उसमें होती है. तो इसको लेकर के यह चार्ज भी किया गया. उसके ऊपर में कि वहां अंडरस्टैंडिंग नहीं है केवल, प्रोडक्शन... इस तरह की बहुत सी बातें बहस में आ गई है. जैसा कि सुरेश जी ने लिखा है कि यह जो पेपर उसने लिखा है वह और लोग भी देखें मुरली वाला जो पेपर है, वह बड़ा इंटरेस्टिंग पेपर... उसको ना माने वह जो कह रहा है, वह मानने की जरूरत नहीं है लेकिन ऐसी ऐसी बातें कह रहा है नॉलेज की दुनिया में ट्रांजिशन से संबंध रखती है कुछ नई बातें, नई किस्म की बातें कह रहा है. और वह सही हो या ना उस किस्म की बातें हो रही हैं. तो इस. इसमें यानी और साइंस एस्टेब्लिशमेंट की आदत रही है कि जो उसे क्रेश्चन कहता है, करता है, उसके बारे में, वह हमेशा यह कहते हैं कि वह समझते नहीं... ये

बड़ा इंटरेस्टिंग है... समझ का ठेका साइंस एस्टेब्लिशमेंट का अंडरस्टैंडिंग का जो उनसे डिफरेंस जिसका हो जाए किसी मौलिक स्तर पर फंडामेंटल लेवल पर उसको कहते हैं, वह समझता नहीं वो यही बात आई के. बारे में कहते हैं कि वह समझता नहीं है वो यही बात नॉलेज इन सोसाइटी लोकविद्या के बारे में भी यही बात कहते हैं. कि वह समझते नहीं वो प्रेडिक्ट करना जानते हैं... वह जिंक बनाना जानते थे लेकिन, जिंक वेप्राइज कराई करके उसके क्या होता है और कोई मिनरल को करके और उसको कंडेंस करके किसी वॉल के ऊपर में किसी वेसल में फिर उसको खुरच करके वगैरह. यह जिंक निकालना वह. जानते थे जिंक की, मेटलजी थी कॉपर की थी, आयरन की थी, लेकिन वह जानते नहीं थे. कि ऐसा क्यों होता है. हालांकि, यह इंटरेस्टिंग इसलिए है कि वह इतना तो जरूर समझते थे कि आप कोई भी इनपुट कंडीशन को वैरी कर दे तब, भी वह डिलीवर कर देते थे. जैसे हम लोगों ने देखा. आयरन के कोयला बदल गया, आयरन और बदल गया, की कंडीशन बदल गई, समुद्र के किनारे चले गए. यानी वह सब कंडीशन जो अवॉइड करते थे, अपने घर पर जब वह कोयला बनाते थे सुबह चार बजे बनाते थे तो साइंटिस्ट ने कहा कि युमिडिटी लो होती है उस वक्त. में. इसलिए, थोड़ा, सा आसमान प्रेशर पर टेंपरेचर राइज कर सकता है थोड़ा ज्यादा यूनिट कंडीशन में टेंपरेचर नहीं बनता है कोयला. बढ़िया वाला लेते थे क्योंकि, साल की जो टहनियां होती थी उसे अपना कोयला बनाते थे. फिर भी, जो लेते थे और वैसे तो हम नहीं होता. था. यानी सत्तर फीसदी आयरन तो उसमें नहीं होता था शायद पचास से कम होता था. लेकिन उसमें भी जो ठीक ठाक होता था वही, लेते थे लेकिन यह सब बदल गया. जब हम लोगों ने उनके साथ काम किया, तो और भी बदल गया. और बालू वाला जो होता था, जिसमें कम आयरन था. वह भी लेकर के काम हुआ. कंडीशन में भी काम हुआ. कोयला भी बदल, गया. सब कुछ बदल गया. खराब कोयले का भी इस्तेमाल हुआ. और उन्होंने फिर भी बनाकर दिखा दिया तो हम लोगों ने यह सवाल उठाया था कि जब आप

कहते हैं कि दे डोंट नो If they did, not know, why it happen, how would, they be able to करेक्ट देअर एक्चुअल प्रोसीजर, फाइनली डिलीवर द मेटल अगर व्हाई का कोई जवाब उनके पास ना हो उनके पास व्हाई का वह जवाब नहीं है. जो साइंस, जिसे कहता है कि व्हाई का यह जवाब है...

इस अर्थ में हमको ऐसा प्रतीत हुआ कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जो उत्तर मिलते हैं या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करके बहुत कुछ, काम जो साइंस में किया जा रहा है, मैथमेटिक्स में किया जा रहा है... यह ब्रॉड चार्ज है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के ऊपर कि ओपेक... मतलब ट्रांसपेरेंट नहीं है, ट्रांसपेरेंट नहीं है या नहीं... एक्चुअली क्या हो रहा है... यह नहीं समझ में आता है Not only that अंडरस्टैंडिंग, यह भी चार्ज उनके समझ में नहीं आता यही चार्ज हालांकि, पिछली बार अपने यहां से यह बात आई थी मैं. उसका डिटेल स्टडी नहीं रखता हूं लेकिन एक्सपेरिमेंट करके हुआ करता था, में आया था. मेरे ख्याल से जिसमें यह था वह चाइनीज एक्सपेरिंट चाइनीज तो ऐसे ही है उसमें क्योंकि चाइनीज भाषा कोई नहीं जानता था, इसलिए चाइनीस शब्द का इस्तेमाल किया है. उसका चाइना से कुछ लेना देना नहीं है. उसे एक्सपेरिमेंट का उसका मतलब यह था. कि अगर आप एक सवाल एक कागज पर लिखकर अंदर डाल दे तो और अंदर से उसका जवाब आ जाए. तो, अंदर मशीन बैठी है कि आदमी बैठा है आप बता, पाएंगे कि नहीं बता पाए यह साल एक्सपेरिमेंट है. कुछ क्या कहते हैं उसको कांटेस्ट है, जो कुछ भी है. तो यह तो दोबारा पर हो गया. इस रूप. में की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस. ने जब जवाब दिया तो, अब आप ये नहीं बता सकते हैं कि आदमियों ने जवाब दिया है या मशीन ने जवाब दिया है क्योंकि मशीन ने सारे आदमियों ने जो जवाब तब तक दिए थे उनको इकट्ठा करके उनमें से सबसे बढ़िया जवाब उनमें से एक जवाब निकाल कर के दे दिया आदमियों ने ही जो जवाब दिए थे, उन्हीं को लिया उसने लेकिन उनमें से कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन कोई और जवाब दे दिया. लेकिन कोई सी और जवाब तक वह पहुंचा. कैसे अब कह रहे हैं कि वह स्टेटिस्टिकल किस्म का इंफरेंस है उसमें प्रोबेबिलिस्टिक इंफरेंस है... और कॉन इफेक्ट का, जो आइडिया है, ओरिजिनल इफेक्ट का डिस्कशन हमें अभी तक मिला नहीं है. इस संदर्भ में का डिस्कशन एक बहुत बड़ा डिस्कशन है. साइंस के संदर्भ में इसके संदर्भ में कि कोई चीज इस बात की समझ, क्या समझ को लेकर के नीति का बहुत बड़ा रोल है दो, तीन सौ साल के साइंस में लेकिन अभी जो बहस चल रही है, उसमें कौलिटी की बहस हमको दिखाई नहीं दी. एक्चुअली कांट, और उसके पहले जितने लोगों ने बहस की देकार्त से लेकर मतलब कितने साल हो गए. लगभग सौ साल यह बड़ी बहस चलती रही है. साइंस का प्रोग्रेस भी एक तरफ है. मिल्टनगरानी. यह सब उसी पीरियड में हुए न्यूटन के बाद और कांट के पहले साइंस को बहुत इज्जत भी नहीं थी. जो कांत ने अपने फिलॉसफिकल एंडिवर से उस साइंस को इज्जत दिला दी समाज में समाज में, या प्रोफेशनल, क्लासेस, में और उसके बाद समाज क्योंकि उन्होंने यह एनालिसिस करके दिखाया और यह फर्क करके दिखाया कि क्या साइंस कह रहा है, और क्या मैथमेटिक्स कह रहा है. नेसेसरी और सफिशिएंट कंडीशन की और कॉलिटी का एक एनालिसिस किया. और बड़ी लंबी लंबी एनालिसिस है जिसको पढ़कर. लगता है कि कुछ नहीं कहा उसने पेज, आफ्टर पेज, आपको पता नहीं लगता है कि क्या कह रहा है, और अंत में कुछ बात कह कर निकल जाता तो, यह और बात के लोगों ने कहा कि कांट का अगर आप कांट नहीं है, तो आप फिलॉसफर नहीं है. मतलब फिलॉसफी ने ही इतना बड़ा स्टेटस उनको दे दिया... बाद में पापर आए वह भी टाइप की बात करने लगे उनके पहले के लोगों से डिपार्ट करके बहुत बड़े पैमाने पर... लेकिन इस सब संदर्भ में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने जो परिस्थिति उत्पन्न कर दी है उसको कैसे समझा जाएगा, क्योंकि ज्यादातर लोग जो उसके बारे में हमने जो थोड़ा बहुत देखा इंटरनेट पर, या यह मुरली की जो... का जो पेपर है इसमें फिलॉसफिकल बैकड्रॉप क्या है इसकी समझ नहीं है, वेस्टर्न फिलॉसफी में दो सौ साल से क्या बहस चल रही है, उसकी समझ मुरली के पेपर में नहीं है, उसको अपरेंटली समझ में आ रहा है कि हो क्या रहा... हम नहीं जानते कितना समझ में आ रहा है. लेकिन दो सौ साल से वेस्टर्न फिलॉसफी में अंडरस्टैंडिंग को लेकर के दुनिया को लेकर के फिजिक्स को लेकर के साइंस को लेकर के लैंग्वेज,फॉर्मल लैंग्वेजेस को लेकर स्टेबिलिटी, वेरिफाइबिलिटी वगैरह, को लेकर के क्या बहस चली है इस पर उनकी पकड़ नहीं है... इसलिए वह बहुत बात अपनी सफाई से... कि कहां से कहां हम जा रहे हैं... यह बात सफाई से वह नहीं कह पाते. ज्यादातर इंटरैक्टिव ग्रुप की बात करने वाले लोग यह बात सफाई से नहीं कर पाते.

हमको जो महसूस हुआ है थोड़ा बहुत पढ़कर वो यह हुआ है कि एक किस्म का बड़ा डेटा का कमांड डाटा, मतलब, बहुत सी इंफॉर्मेशन बहुत और एक मशीन ऐसी है, जो सारी इंफॉर्मेशन का कमांड जिसके पास है मतलब एक्सेस उन सब

इंफॉर्मेशन के पास जाती है, और मेमोरी इतनी ज्यादा लगभग मेमोरी है कि वह हर चीज को देख सकता है. और फिर उसके अंदर क्या कोरिलेशन बनते हैं. उनको रिलेशंस को बताता है कि डिफरेंट पीसेस ऑफ इंफॉर्मेशन आपस में रिलेटेड कैसे और वह इतना पावरफुल है. और उसको इतने को रिलेशन दिखते हैं कि बहुत सारे को रिलेशन एक्चुअल लाइफ में एक्चुअल दुनिया में होते नहीं और उसको दिखते हैं, उसमें है तो बताता है कि वह भी है. इसलिए, वह बहुत सी चादी चीजें बातें ऐसी करता है, वह मशीन ऐसी बातें करती है. आई. वाली जिसमें वह ट्रस्ट वर्दी नहीं है क्योंकि बहुत सी बातें वह गलत भी करते हैं. गलत. इस अर्थ में आपका, जो कॉमन सेंस, है या आपने जो साइंस अभी तक किया हुआ है, और साइंस की जो पकड़ है, जो एक्सपेरिमेंट के मार्फत आप जांच सकते हैं उसमें खरा नहीं उतरता है. इसलिए, वह गलत है. तो वह कह रहे हैं कि वह जब कोई चीज बताएगा कि क्या सही है. इस तरह के, अगर वह बीस पचास स्टेटमेंट देगा तो आपका एक वेरीफायर करके नाम से एक मशीन होगी. जिसकी कैपेसिटी, कम उसके कमांड में सारी इंफॉर्मेशन नहीं लेकिन रिलायबल इंफॉर्मेशन है, और उसका जो मेथड, है, वह रिलायबल तो वही को रिलेशन देता है या उन्हीं को रिलेशंस को मान्यता देता है वेरिफाई, करता है उन्हें थीस को मान्यता देता है जो उसको सही लगते हैं, और वह संख्या में बहुत कम होते हैं. कंपेयर टू पहली मशीन जिसने सैकड़ों तो, इस तरह से एक प्रूफ या डिस्कवरी की मशीन है और दूसरी वेरिफिकेशन की मशीन है. वह वेरिफाई करके बताता है कि बहुत सा बकम है. काम का नहीं है. इसमें यह है, यह ट्रस्टेबल है इसको. आप ले लीजिए वो कह रहे हैं कि यह नया यह नई चीज हुई है वेरिफिकेशन का इतना इतनी बड़ी भूमिका शायद यह उनकी जानकारी ठीक से नहीं है. वेरिफिकेशन की भूमिका हमेशा से बहुत बड़ी रही है. शुरू से साइंस का पूरा ट्वेंटी सेंचुरी, फिलॉसफी ऑफ साइंस जो, है वेरिफिकेशन, और फॉल्स फाइबिलिटी के राउंड पूरा कंस्ट्रक्ट वेरिफाइबिलिटी और फॉल्स को लॉजिकल बना दिया उन्होंने. वेरिफिकेशन और फॉल्सिफिकेशन नहीं कहते हैं वेरिफाइबल और फॉल्सिफाइबल कहते. हैं वह थोड़ी सी बहुत ज्यादा फर्क नहीं है लेकिन, उसको समझा जा सकता है कोई. बहुत मुश्किल चीज नहीं तो हो, ये, रहा है की, जो नया दुनिया के बारे में जानकारी का जो नए तरीके आ गए हैं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मार्फत बड़े पैमाने पर आ गए हैं. या विस्तार से आ गए हैं. वह किस अर्थ में साइंस ट्रस्टेड था उस, अर्थ, में ट्रस्टेड नहीं तो वह ट्रस्ट वर्दी बने विश्वसनीय बने इसके लिए एक और मशीन या एक और मेथड का इस्तेमाल करते हैं. तब. वह ट्रस्टेबल हो जाता है यह इसको इंटरैक्टिव प्रूफ कहते हैं, तब, आपके पास प्रूफ हो गया कि जो, इनिशियल बात थी वह, सही थी लेकिन यह बात बहुत बड़े पैमाने पर हमको. जो महसूस हुआ वह यह कि जैसे किसान किसान के पास बहुत ज्यादा इंफॉर्मेशन है. इस बात की तरह तरह की खेती किस तरह से हुआ करती थी. उसके एरिया में कैसे होती थी उससे मिलने आने वाले लोग यह अपने यहां का जो साधु संतों का सिस्टम था, यह घूम घूम कर जाते थे. और सब जगह दूसरी जगह पर क्या हो रहा है यह दूसरी जगह बताते थे. सिस्टम ऑफ कम्युनिकेशन था. उसके मार्फत. उसको जानकारी उसको बहुत जानकारी हुआ करती थी. अबाउट एग्रीकल्चर कैसे होता कोई पर्टिकुलर खेती, सरसों, की खेती गेहूं के साथ मिक्स कैसे हो सकती है किसी सब्जियों के साथ मिक्स कैसे हो सकती है. किसी और चीज के साथ मिक्स सबकी एक समझ भी और वह उस हिसाब से एक्चुअल कंडीशन में उस का प्रयोग करता था. पानी कितना अवेलेबल है, गेहूं होगा या नहीं होगा, जहां वह खेती कर रहा है, धान, होगा या नहीं होगा जहां, वह सबको ध्यान में रखते हुए, वह क्रॉप का मिक्सिंग करता था क्यारियां बनाता था वगैरह, सब कुछ करता लेकिन जब वह हाइपोथेसिस बना रहा था और, वह कोई पर्टिकुलर पॉइंट ऑफ टाइम पर नहीं होता लॉन्ग, प्रोसेस Present एग्रीकल्चर में एक लंबी प्रक्रिया के रूप में यह हुआ होगा निश्चित. ही जब यह समझ बनती थी कि ऐसे भी हो सकता है. वैसे भी हो सकता है. तो उसके एक्सपेरिमेंट करता और एक्सपेरिमेंट की मारफत को यह तय करता. रहा एक्सपेरिमेंट. आपकी वेरिफायर, जो इस नए सिस्टम में इंटरेक्टिव प्रूफ में, जो वेरीफायर है वह किसान के लिए या कारीगर के लिए एक्सपेरिमेंट नॉलेज का बहुत बड़ा कमांड है. उसके पास में भी उसमें से कई हाइपोथीसिस निकलती हैं और उससे बात करना, अगर आपको आता है और आप में वह ट्रस्ट रख सकता है तो आपको बात करके बता सकता है कि इस तरह भी को रिलेशन हो सकता है. इस तरह से भी को रिलेटेड हो सकता है, इस तरह से भी हो सकता है. और आप एक्सपेरिमेंट करके यह तय कर सकते हैं कि वास्तव में किस तरह से तो इसमें यह सिमिलैरिटी है. यह हमें महसूस हुआ. वह पेपर पढ़कर के कि जिस तरह का क्रिटिसिज्म, है का साइंस एस्टेब्लिशमेंट द्वारा और जिस तरह का के गुण एआई में और लोक विद्या जिस किस्म की क्वालिटी देखी जा रही है, उसमें सिमिलैरिटी हम लोगों. का यह ग्रुप जो जिसमें ऐसे. लोग हैं, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अच्छी अंडरस्टैंडिंग

रखते हैं. लोक विद्या की भी अच्छी अंडरस्टैंडिंग रखते हैं और साइंस की भी अच्छी अंडरस्टैंडिंग कई लोग दिख रहे हैं. थोड़ा कम, थोड़ा ज्यादा लेकिन अंडरस्टैंडिंग ऑफ मेन लोक विद्या भी और यह लोक विद्या कहिए. नॉलेज इन सोसाइटी कहिए. आप अलग अलग नामों से कहिए इसमें कोई. बहुत नहीं है कम्युनिटी नॉलेज कहता है, वो अपना केरल वाला, जो दोस्त है. और वो कहता है, ट्रेडिशनल नॉलेज तो उनकी सेवा के लिए टर्म्स डिफाइन ठीक, है उसकी, अपनी पॉलिटिक्स है वगैरह. लेकिन तरह तरह से इस्तेमाल भाषा होती रहती है. ट्रेडिशनल नॉलेज, इंडीजीनस नॉलेज कम्युनिटी नॉलेज, लोक विद्या तरह तरह के शब्द, जहां जो प्रोप्रियेट हो ठीक हूं. वहां वहां उनका इस्तेमाल किया जाता है तो हम लोग क्या इसके इन्वेस्टिगेशन में थोड़ी, रुचि, ले सकते हैं एक कारण, सैद्धांतिक जो सिमिलैरिटी इन दो में डीपर हो सकती है ए. आई. नाम. का डिफरेंस बहुत है. और डिफरेंसेस के ऊपर लिखने वाले भी बहुत मिल जाएंगे जैसे. एनवायरनमेंटल. डिस्ट्रक्टिव है जैसे उन्होंने ईरान में अपने में से किसी ने लिखा कि अगर एआई से ना तय किया गया होता तो स्कूल के ऊपर शायद ना होता लेकिन हम यह भी जानते हैं कि अगर कैथोलिक्स के हाथ में वह पावर होती, तो भी स्कूल के ऊपर शायद हो जाता क्योंकि पास्ट में हो चुका है. उन्होंने न जाने कितने ऊपर में क्रिश्चन लोगों ने स्कूल के ऊपर और कहां कहां बॉम्ब किया है जमातों में किया है. उनको स्मॉल पॉक्स करके मार डाला है. तरह तरह के काम किए हुए हैं. यह कोई मारने की चीज को मारने के क्रम को कोई नया हाइट दे दिया यह तो, वेस्टर्न वर्ल्ड की टेंडेंसी है इस. तरह के काम करने की वेस्ट ने किया हुआ है. यह जहां क्राइस पैदा हुए थे वहां, के लोगों ने नहीं किया यह जो कंट्री है. ऊपर. वाले कुछ वहां, जिस किस्म का ईसाई तुनेशिया वगैरह, से जहां से, वह बड़े संत उनके फोर्थ सेंचुरी वाले क्या यह, लोग जहां से हुए और से, जैसे अपने यहां कौन है वह केरल में वह जो पुराने क्रिश्चियन लोग हैं जहां से आए थे सीरियन सीरिया, वगैरह में क्रिश्चियनिटी जिस. तरह से हुई इन लोगों ने नहीं मारा है लोगों, को, बड़े पैमाने पर तो वेस्ट अच्छा! इसमें और किस्म की बातें भी हैं, जैसे लॉजिकल. पॉलिटिक्स की किताब है लिखती है कि दुनिया तो बहुत है, और बहुत तरह की दुनिया, है, लेकिन वेस्ट इज नॉट वर्ल्ड वेस्ट मशीन अभी जो वेस्ट के ऊपर अटैक हो रहा है खास, करके मल्टीपोलर, प्रेस में वो भी वह पुतिन के फेवर वाले लोग हैं. उसको आप एक पिच ले सकते हैं. वह एंपायर बनाने की कोशिश भी करने में लगे हो. सकते हैं लेकिन वह बात तो वेस्टर्न फिलॉसफी की ज्यादा कर रहे हैं. वो नीचे और कांट की ही बात करेंगे लेकिन अंत में जाकर के वह वेस्ट के खिलाफ खड़े होना चाहेंगे. इस तरह का एक बड़ा प्रोसेस अभी चल रहा है. क्या, हम इस टेक्नोलॉजी को कहीं तो भी जो, फॉर्मल लैंग्वेज की टेक्नोलॉजी जो लैंग्वेज की है कहीं पर, हम यह देखते हैं कि उसकी सिमिलैरिटी प्रोसेस के साथ है जो थॉट और उसकी जिस लैंग्वेज में वह थॉट है उसमें अंतर करना संभव नहीं रह जाता है. चाहे वो भोजपुरी के स्पीकर किसी मैथिली के स्पीकर उड़ीसा के किसी ईस्टर्न उड़ीसा के कटक के स्पीकर वहां की भाषा का इस्तेमाल करते हो या दूर, दक्षि तमिलनाडु. की जो भाषा हो सकती है उसका इस्तेमाल करते हैं तरह तरह की भाषाएं हैं. जिसमें वह सोचते हैं क्योंकि एक बात हमें याद है, हम लोग कृष्ण राजनू की शादी में गए थे वह. बात भूलने वाली नहीं है वहां कोई. आए थे हरीश नाम के जो टाइम्स ऑफ इंडिया न्यूज़ टाइम में. थे उस वक्त ई नाडू वालों ने न्यूज टाइम निकाला हुआ था टाइम्स ऑफ इंडिया का एक ट्रांसलेशन या क्या कुछ तो भी एक अखबार था अंग्रेजी का उसमें वह खरीद करके दामोदर उन्होंने कहा कि जब हम राइटिंग चेक करते हुए एडिटोरियल कमेटी में थे तो, जो लोग अपनी भाषा में सोच कर के अंग्रेजी में अनुवाद करके अंग्रेजी में लिख कर देते हैं, वह लेखन ज्यादा अच्छा होता है. और जो लोग अंग्रेजी में सोचकर अंग्रेजी में लिखते हैं, वह लेखन कमजोर होता है. हमारे पास कोई. इसका यह नहीं सबूत नहीं है. लेकिन उन्होंने कहा, हैदराबाद में There is a certain standing इन द प्रेस Off इंग्लिश प्रेस That आप अपनी भाषा में सोचकर अंग्रेजी में अनुवाद करेंगे. तो, ज्यादा क्रिएटिव राइटिंग मिलता है हालांकि, फ्लेयर, ज्यादा हो सकता है उसमें जो अंग्रेजी में सोचकर अंग्रेजी में लिखता है लेकिन, उसमें कंटेंट का अभाव हो सकता है तो, क्या इन बातों को भाषा के इन प्रश्नों को एक्सप्रेशन को कम्युनिकेशन को फॉर्मल लैंग्वेज को और लोक विद्या को और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को स्टैटिस्टिकल इन्फरेंस, को प्रोबेबिलिस्टिक इन्फरेंस को जिसको वह कहते हैं, उसको सवाल भाई, समथिंग, हैपन इस सवाल के कई जवाबों की पॉसिबिलिटी को क्या इन सबको हम कहीं एक जगह ला. करके देखने का प्रयास कर सकते हैं यही सवाल हमको यह ग्रुप के सामने रखना था आज हमने जो सुरेश जी ने लिखा है उस पेपर के ऊपर टिप्पणी पढ़ी और उसमें बहुत सी बातें ऐसी हैं जो हम नहीं जानते. थे. हमारा पढ़ने लिखने की दुनिया थोड़ा दूर हो गए जो साइंस वालों जो, उन्होंने पेपर की उनके लेखक को जो कह रहे हैं कि लगभग सब कुछ फाल है जो, पिछले दो सौ साल की डिस्कवरी है. वह सब फॉल है, नहीं, है और क्या

क्या करके ऐसा कुछ कुछ लिखा. और उसको इज्जत देने वाले लोग भी हैं. मैथमेटिक्स में भी नए लोग आ गए हैं, जो कहते हैं, कि इनफिनिटी एक ही होती है, दस तरह की नहीं होती है. सारी की सारी कितने फील्ड प्राइस हो गए मॉडल हो गई. कई तरह की अब एक बड़ा स्कूल खड़ा हो. गया है, जो यह कह रहा है कि इनफिनिटी कई तरह की नहीं होती. मैं यह कह रहा हूं कि फिलॉसफी ऑफ साइंस में एक बड़ी डिबेट, फिलॉसफी, मैथमेटिक्स, साइंस एक बड़ी डिबेट है. पिछले कुछ समय से जो पहले नहीं थी और हमारे यहां के कुछ लोग, उस डिबेट से परिचित सुरेश, जैसे परिचित और भी लोग भी हो सकते हैं. परिचित क्या लोक विद्या में क्या दृष्टिकोण है इसको दिमाग में रखते हुए लोक विद्या, कंटेंपररी, नॉलेज, फॉर्म Not as traditional knowledge not, as स्पेसिफिक, कम्युनिटी, नॉलेज I mean एनीथिंग, ट्रेडिशन, कम्युनिटी अगर कंटेंपररी नहीं है, तो हमारा उसमें इंटरेस्ट नहीं इस दृष्टिकोण से कंटेंपररी जो लोग पहले कुछ जानते थे या नहीं जानते थे इसकी चिंता हम कर सकते हैं. लेकिन शायद हम लोग को उतना. लाभ उसमें नहीं होने वाला है. जितना उसके कंटेंपररी नॉलेज का रूप क्या है लोक विद्या कंटेम्परेरी, नॉलेज इसके साथ में क्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ या उसके साइंस स्टैब्लिशमेंट, उसको जैसे देख रहा है. उसके साथ और जो जो कुछ कर पा रहा है, उसको ध्यान में रखते हुए क्या लोक विद्या का कोई नया एसेसमें कोई नई बात, हम लोग विद्या के बारे में कह सकते हैं. इतना ही सवाल...

Girish Sahasrabudhe:

इस पर आगे अभी बात करनी है. यह बडा सवाल है, बहुत सी चीजें इसमें... लेकिन कुछ लोगों ने इस पर सोचा हुआ हो सकता है पहले भी थोड़ा बहुत... तो कुछ तो रिएक्शन आ सकती है लेकिन फिर से उसको देखा जाए कुछ डीटेल में और किस तरह से हमें सवाल को समझ सकते हैं इसको थोडा देखें... अगर इमीडिएट कमेंट्स हैं कुछ... तो बिल्कुल अभी होनी चाहिए... आप बोली सुरेश, आपके पास जो बातें हैं...आप उन्हें कुछ कहें...

jksuresh:

हमें लगता है कि One. Of The things about this ai Is अभी तीन साल से शायद ठीक से देखेंगे. तो दस साल से इसके बारे में काफी कुछ कहा गया है. हर संदर्भ में और उसका जो जो कहा गया है, उसका रूप सार दोनों बहुत बदल बदलते जा रहे कुछ ही समय के पहले, इसका जो सच्चाई के बाद तथ्य है कि नहीं वैसे कुछ बातचीत बातचीत हो रहे थे And then, subsequently इसके बारे में थी और प्रूव करेंगे कि नहीं ऐसी बातें होने लगे. अब आ गया है. एक परिस्थिति जब कहते हैं कि कई तरीके का प्रूफ. इससे हो जाएगा. और जो मानव. भी नहीं कर सके वो भी यह प्रूफ कर सकते हैं One example, being given, for that is, अभी एक दो महीने तीन महीने पहले करके एक वर्शन आया था. किसका एंथ्रोपिक जिसमें थ्रू विच अभी जो दस बीस तीस साल से जो सॉफ्टवेयर कोड लिखा गया है उनमें इतना बड़े सिक्योरिटी फ्लास है कि कोई भी को उतना परिणीति के साथ न जाने. सॉफ्टवेयर को लेकिन इस सॉफ्टवेयर को का उपयोग करने से He Will be able to break into And take hostage, many software, and through, that सॉफ्टवेयर बेसिस ऑफ द वर्ल्ड इंटरनेट यह सब हो चुका है. अभी थोड़ी समय के बाद उसका भी कुछ ढूंढ, लेंगे. फाइन Way out, for all that Because ordinary लोग यह नहीं कर पाएंगे. मैं भी स्पेशलिस्ट ग्रुप Criminals will be able to bridge that which, includes Cia and other kinds of people. In addition to ordinary criminals. Uh हमें लगता है कि मेकिंग वेरी, लार्ज स्टेटमेंट, अबाउट From a लार्ज, फिलॉसफिकल It must be a continuous exercise But we cannot say, that this is this is a very पक्का. क्रिटिक और Uh, uh, You, Know, Very What would you say लॉन्ग टर्म Because उसका कैरेक्टर और उसका behaviour दोनों काफी कुछ बदलते रहे हैं And just to give an example Most recently अंडरस्टैंडिंग पीपल है In terms of its uh Use and possibilities and, so on Is that the idea of Ai Is not necessarily to really मेक एनीथिंग बेटर, फॉर Uh. Humanity as a whole But it fits into the larger project Because There is a big project, which is happening in the hands, of the oligarch and, the The big, Uh You know governments, and their ब्रांच तो लास्ट पार्ट This pandemics and so on डेवलपमेंट, कंट्रोल Because I think Many people have figured out especially, those who rule the world That one of the greatest problems with this world, is that These.

Uh Desperate Hungry पीपल The three, or five percent, of the people Conspiracy, and so on सेंटर Have nothing to do with really the Much larger control of the people Uh. You, Know they, never before Please remember that There is to be such a huge cry about चाइना भी सर्वेस्ट वहां पर, यू. कैन, एक्चुअली पर्सन, जो मार्केट में, वह पैदल चल रहा है. ये. तो ऑर्डिनरी हो चुका है In a place like London, I think they have Several lacs of cameras, all along the roads, and various other places. So it is possible, that there might be an exchange of आइडिया सोसाइटी, चाइना If you think what I said before, is a little far, stretch प्लीज रिमेम्बर That जर्मनी If you simply say, on the road फ्री, पैलेस्टाइन वाटरमेलन Stadium you. Can be arrested as a terrorist In England इफ यू से anything About Palestine saying not doing anything You can be actually termed a terrorist Judicial practices being brought in, which, say To the jury You cannot शेर Uh. You, Know happening and, so on, to, the jury And the, fact that they have been credit as terrorist and not as people who violated something समथिंग, हैपनिंग फीलिंग That there is something totally. A collapse is possibly The way, the people are being handled You know, the kind of ऑपरेशन, अगेंस्ट पीपल It hasn't yet reached. The Third World proportion of India and so on. But I have a feeling That May be something विच में एक्चुअली पॉइंट क्रिएट तो यह सब प्रोसेस क्रिएट मैनेज पॉसिबल, रिकायर् और पर, मैं भी These, people, like Palantir people, like come in the United States, Government and various other government एक्चुअली बीन एबल टू यू It is possible also that has a small part of its ऑपरेशन नोबल, प्राइस Who will possibly use that to improve their models and, do this and, do that They'll give you very learned about epistemol Whatever else and so on And uh जस्टिस At the beginning of this Probably models of Uh. You, Know science, and, so, on Uh इनक्लूडिंग वैसी So there was a lot of opposition to that but subsequently. पार्टी साइंस में टेक्नोलॉजी As a part of the confidence building in AI. Uh, uh, you know, improves, and uh... in making statistically valid statements about the world and so on. So, yeah, yeah, it may continue to actually... Be a tool of that sun. start with most of these people. But what if... the only question that I'm asking is, What if AI actually is intended for something else to a much larger than this thing The same old argument that, uh... these rifles and butter rifles and so on are used for hunting in the... North America, Canada, and so on. But their dominant domain, you know, development of the technology is for the mass, large-scale murder of... human beings and so on. So, could such a thing be actually true about AI We don't know, because... I see that every 6 months, there is a different description of the central mission of AI. So maybe we should continue to actually formulate our own theories about what AI is. And even if after 6 months, 1 year, 2 years, they are proven to be either, uh, you know, two ugly hypotheses, it shouldn't matter, because... Uh, that is how we debate the... development of possibly one of the most, uh, disruptive and, uh... possibly destructive technologies in there. History of my thing. So that's it

Girish Sahasrabudhe:

Okay. Gandhi? Gandhi... Okay, looks like he is not able to hear me.... Uh, see, there are two, three things which I can just sort of mention here as, uh... reaction to whatever Sunil and Suresh said. One is this, that... If, uh... one wants to look at a formal kind of connection... I mean, that's what I'm thinking... in terms of a formal connection at this time... between, ... because right now, I think that that is all that it amounts to... the connection between the way AI operates, or AI-driven systems operate, and, uh, the kind of mechanisms which lokavidya... incorporates sort of... This uh... ensemble kind of, uh... operation... जिसमें मतलब which, of course, has the statistical inferential, regressional et cetera, et cetera,

all these forms, various methods which emanate from handling large amounts of data and large numbers, etc., etc. Uh, I sort of tend to think of this, at least today, as a… Uh, as a formal kind of connection. There is that... that is undeniable... that there is a formal connection like that. But beyond that, I think the more important question here becomes what exactly one means by data. Uh, and that, uh, uh, is a question of… Uh, which is, in some sense, similar to… how, for example, consciousness… differs from… a network of, you know… physical systems, chips, or whatever it is… artificial neurons, etc. So, just as one thinks of these two as essentially different, I think there is a similar difference between the way… Uh, information and data are understood within, uh, Lokvidya Samaj (on the one hand) and within this artificial intelligence community (on the other). That is, and I think that is not denied anyway, by whatever Sunil said. But, uh, that means… probing and investigation, because… That is why I'm saying that this is a formal connection to the… in the sense that… the understanding of data is very different. And, uh, that is one thing… then the handling of data is, of course, openly, I mean, very different, because the way, uh, I was reading one of these interviews with Dugin gave recently about philosophy of AI.... Now, somewhere there, he quotes, uh… an answer given by an AI system... uh, to the question of, uh… how the memory of… within a society differs from a memory within AI let's say. And the answer which came… and he says that it was a very surprising answer… the answer which came was that… The AI system said that my memory is spatial… in space, whereas the memory in the society is temporal. Now, this is philosophically a major difference, according to Alexander Dugin, and it's quite clear that this is a major difference. That within a living society data operates very differently. It takes the form of memory, a memory of, uh… uh, by a society, which may be, you know, small… autonomous kind of thing, or a larger society, et cetera, et cetera. Whatever way you understand society… but there is a continuity which is temporal. And so the memory is collected over that in the form of etc. It is very different with an AI system, which makes it a spatial memory, etc. So there are… such, uh, essential kind of differences. which give a different meaning to… the information which is being handled.

So, but there is definitely this identity of… not identity, but very close similarity… in the ways an AI system derives its conclusions, and, uh, the way… a living society uh, works out what it wants to believe, and it's narratives, etc., etc. Uh, there is a similarity in the… in, uh, what one may say the… may call the… the… the… what… maybe the… well, the fuzzy character, or whatever you call it... it's not… a numerical certainty. There is a width to the beliefs, and there is a width, therefore, also to the possibilities considered, etc. The AI system does something similar. It will give you a many scenarios, which can follow from the data. Now, it seems to me that they should be taken seriously, rather than… Uh, uh, and… seriously, in this sense, in which… See, the… take a typical example, like, uh… choosing a battery material. I remember that, uh, in one of these International Energy Association meetings…. one person from Microsoft was sitting there until… this is 2 years, more than 2 years back, and large language models were… still emerging. I mean, they were not there, actually… they must have been there in very experimental forms... but there were similar methods available. or the very initial models, whatever. I don't know what… what was his contention based on… But the claim made by the Microsoft, uh… Executive was that… and they, uh… looked at some few lakhs of battery materials within a day… within a matter of few days… and then selected out some 10 of them… or some such ridiculously small number. compared to the (number they examined), and said that these are possible materials. And then on,

after that, of course experiments were done. Not all of them were... usable from the point of view of the battery people. So they chose some of them. Now, what I'm saying is that these other materials also maybe meaningful to the same people, with different set of... if they are able to, of course, put in a different set of controls, etc., etc. So, they are not completely nonsensical, maybe. And in this case, maybe it was not so sharply... I mean, not sharply so, but... I can imagine... Uh, situations in which, uh, many of these scenarios are actually... not discardable. They are serious in some sense. As derived from data. So, the width is real in some sense, which... even the scientific community may not be able to completely accept in the context of their capabilities today... what they are trying to offer... what they can do today... they, of course, rule out most of them. But that doesn't make them even strictly unscientific in that sense. Maybe. I mean, I don't know whether this is true or not. But in general, if the claim is that there is no reality out there then I think one has to take this seriously. Even in the case of scientific, uh... situations, in case of situations which are natural... uh, which relate to natural sciences. And it is also true that most of the examples which these people give, like, uh, there is a very similar paper, which I will put in the... there is a Readings directory, which I've created. I have sent the paper to Sunil... I'll put it in this Readings directory. This is a paper by one person who is looking at this artificial intelligence developments, which appears to me some... something very similar to what Murli has said. He talks of... the Loop as the process described, which, uh... Murli is describing, maybe with some differences. For him, Verifiers are human... and for Murli Verifiers are, uh... algorithms, many of them. So, he's talking more in front of the computer science, this thing.. viewpoint, whereas maybe this person I'm saying... his name is some complicated name... he is talking more... of examples which, uh... are not strictly in the computer field. Maybe other, like, battery, like, uh, this folding... still scientific, but protein folding, etc., etc. So, you see, the very similar paper, actually.

So, this is something real. I mean, what Murli is saying is not... It is something which is happening. And which is being realized in many places by many people. And we should be looking at this, maybe we will be able to define our points of view. better in relation to what AI is saying. Of course, whatever Suresh was saying, there is great truth in it, that today it's... mainly giving... a very large... push to controls by the state. There's no doubt about that. controls by the state, as well as... manipulation of my psychologies. social media, it's no doubt about that, that the... Artificial Intelligence methods developed are... basically directed... There is another paradox also, which is this... that this whole AI system runs on machines, And there is, uh, no way about, uh... No, uh, I mean, at least, uh... One cannot see a way. I would... how these kinds of things are implementable at it any level of ordinary life... I mean, it is not that that is what one is trying to look for..., but... So, so, so the control business is... very strong. I mean, this control, uh, that they are being used for control... methods will be developed more and more to strengthen that control. To make military operations better, to surveillance oper... etc., etc. I mean, that... point is very heavy. So, uh... I mean, that's all I have to say today. There's... maybe one should be looking at these things at the philosophical level... there are things which... look like very close relations whether one can talk intelligibly about those things in the context of Lokavidya... this version, what we should be actually exploring. Okay, I mean, I don't have anything further. Avinash?

Avinash

I think we'll continue. this fully later... I want to read ...

Girish Sahasrabudhe:

Okay, so let us stop here. दस जूं को बुधवार है तब मिलेंगे...